ततो रघुरजस्तस्मात्सुतो दशरथः कृती ।
तस्माद्रामो हरिः साक्षादाविर्भूतो जगत्पतिः ॥ २२ ॥

दीर्घबाहुका पुत्र रघु, रघुसे अज, अजके पुत्र दशरथ और दशरथजीसे साक्षात् जगन्नाथ हरिने श्रीरामरूपसे अवतार लिया ॥ २२ ॥

रामावतारमाकर्ण्य कल्किः परमहर्षितः ।
मरुं प्राह विस्तरेण श्रीरामचरितं वद ॥ २३ ॥

रामावतारकी कथा सुनकर कल्किजी परम हर्षको प्राप्त हुए और विस्तारसहित श्रीरामचरित्रके वर्णन करनेको मरुसे कहा ॥ २३ ॥

सीतापतेः कर्म्म वक्तुं कः समर्थोऽस्ति भूतले ।
शेषः सहस्रवदनैरपि लालायितो भवेत् ॥ २४ ॥
तथापि शेमुषी मेऽस्ति वर्णयामि तवाज्ञया ।
रामस्य चरितं पुण्यं पापतापप्रमोचनम् ॥ २५ ॥

मरुने कहा—इस पृथ्वीमें ऐसा कौन है जो सीतानाथ रामचन्द्रजीके कार्योंका वर्णन करसके बरन् हजार मुखवाले अनन्तजीभी वर्णन करनेको समर्थ नहीं हैं; तथापि आपकी आज्ञासे अपनी बुद्धिके अनुसार पवित्र और पाप तापका दूर करनेवाला श्रीरामचन्द्रजीका चरित्र वर्णन करताहूं २४॥२५

अजादिविबुधार्थितोऽजनि चतुर्भिरंशैः कुले
रवेरजसुतादजो जगति यातुधानक्षयः ।
शिशुः कुशिकजाध्वरक्षयकरक्षयो यो बला-
द्बली ललितकन्धरो जयति जानकीवल्लभः ॥ २६ ॥

पूर्वकालमें ब्रह्मादि देवताओंकी प्रार्थनासे सूर्यवंशके विषय राम, लक्ष्मण, भरत व शत्रुघ्न इन चार अंशोंकरके दशरथजीसे राक्षसोंका अन्त करनेवाले जानकीके पति श्रीरामचन्द्रजीने अवतार लिया, जिन्होंने शैशवावस्थामें विश्वामित्रजीके यज्ञके मध्यमें विघ्न करनेवाले राक्षसोंको बलसे नष्ट करके श्रेष्ठताको प्रकाशित किया ॥ २६ ॥

मुनेरनु सहानुजो निखिलशास्त्रविद्यातिगो
ययावतिवनप्रभो जनकराजराजत्सभाम् ।
विधाय जनमोहनद्युतिमतीव कामद्रुहः
प्रचण्डकरचण्डिमा भवनभञ्जने जन्मनः ॥ २७ ॥

जिनकी महिमासे फिर कामनापूर्ण जगत्में फिर पुनर्जन्म नहीं होता, जो अत्यन्त बलवान् और प्रभासम्पन्न हैं ऐसे समस्त शस्त्रविद्याके जाननेवाले

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रीरामचन्द्रजी जनमोहनरूप धारण करके लक्ष्मणजीके सहित मुनियोंके साथ साथ राजा जनकजीकी सभामें गमन करते हुए ॥ २७ ॥

तमप्रतिमतेजसं दशरथात्मजं सानुजं
मुनेरनु यथा विधेः शशिवदादिदेवं परम् ।
निरीक्ष्य जनको मुदा क्षितिसुतापतिं सम्मतं
निजोचितपणक्षमं मनसि भर्त्सयन्नाययौ ॥ २८ ॥

ब्रह्माजीके पीछे जिस प्रकार चन्द्रमाजी बैठे हों तैसेही वह अनुपम तेजस्वी श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणजीके सहित विश्वामित्र मुनिके पीछे विधिके अनुसार बैठे, आदिदेव परमश्रेष्ठ भगवान्‌को देखकर जनकजीने विचारा कि, यह जानकीके योग्य वर हैं अतः निज पणको अनुचित समझ अपनेको मनहीं मनमें धिक्कारते हुए श्रीरामचन्द्रजीके निकट गये ॥ २८ ॥

स भूपपरिपूजितो जनकजेक्षितैरर्च्चितः
करालकठिनं धनुः करसरोरुहे संहितम् ।
विभज्य बलवद्दृढं जय रघूद्वहेत्युच्चकै-
र्ध्वनिं त्रिजगतीगतं परिविधाय रामो बभौ ॥ २९ ॥

जनकजीके आदर और जानकीजीके कटाक्षसे सत्कार पाय श्रीरामचंद्रजीने वह अत्यन्त कठिन धनुष हाथमें लेकर दो टुकडे करडाला । तब "श्रीरामचन्द्रजीकी जय !" इस ऊंची ध्वनिने त्रिलोकीको व्याप्त किया, तिससे श्रीरामचन्द्रजी अत्यन्त शोभायमान होने लगे ॥ २९ ॥

ततो जनकभूपतिर्दशरथात्मजेभ्यो ददौ
चतस्र उशतीर्मुदा वरचतुर्भ्य उद्वाहने ।
स्वलंकृतनिजात्मजाः पथि ततो बलं भार्गव-
श्चकार उररी निजं रघुपतौ महोग्रं त्यजन् ॥ ३० ॥

इसके उपरान्त राजा जनकने राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न दशरथजीके इन चार पुत्रोंको सीता, ऊर्मिला, माण्डवी और श्रुतकीर्ति अपनी यह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चार अलंकृता कन्या आनन्दसे दान करदीं । फिर यह सब विवाह करके अयोध्याको आ रहे हैं कि, इसी समय मार्गमें भृगुनन्दन परशुरामजीने रामचन्द्रजीके ऊपर अपना अमित विक्रम प्रगट किया ॥ ३० ॥

ततः स्वपुरमागतो दशरथस्तु सीतापतिं
नृपं सचिवसंयुतो निजविचित्रसिंहासने ।
विधातुममलप्रभं परिजनैः क्रियाकारिभिः
समुद्यतमतिं तदा द्रुतमवारयत्कैकयी ॥ ३१ ॥

फिर राजा दशरथजीने अयोध्यामें आय मंत्रियोंके साथ सलाह कर सीतापति श्रीरामचन्द्रजीको अपने विचित्र सिंहासनके देनेका संकल्प किया। अभिषेककी समस्त तैयारियें होने लगीं । परिजनलोग अभिषेककी सामग्री इकट्ठी करनेमें लगे । इसी समयमें कैकेयीने आय रामाभिषेकमें उद्योग करते हुए दशरथजीको शीघ्र रोका ॥ ३१ ॥

ततो गुरुनिदेशतो जनकराजकन्यायुतः
प्रयाणमकरोत्सुधीर्यदनुगः सुमित्रासुतः ।
वनं निजगणं त्यजन् गुहगृहे वसन्नादरात्
विसृज्य नृपलाञ्छनं रघुपतिर्जटाचीरभृत् ॥ ३२ ॥

फिर पिताकी आज्ञासे सीता और लक्ष्मणजीके साथ श्रीरामचन्द्रजी वनको गये, फिर साथ आतेहुए पुरवासियोंको छोड (१) गुहके गृहमें जाय राजचिह्नोंको त्याग जटा, वल्कल धारण किये ॥ ३२ ॥

प्रियानुजयुतस्ततो मुनिमतो वने पूजितः
स पञ्चवटिकाश्रमे भरतमातुरं सङ्गतम् ।
निवार्य्य मरणं पितुः समवधार्य्य दुःखातुर-
स्तपोवनगतोऽवसद्रघुपतिस्ततस्ताः समाः ॥ ३३ ॥

---

(१) गुहगृह । गुह अनार्य निषाद जातिका स्वामी था इसके गुणोंको देखकर श्रीरामचन्द्रजीने इसके साथ मित्रता की और आदरसहित हृदयसे लगाया । गंगाके उत्तर किनारेपर शृंगवेरपुर (वर्त्तमान संगरूर) Sungroor नामक नगरमें इसकी राजधानी थी ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तहांपर मुनिवेषसे पूजित हो (१) पञ्चवटीके आश्रममें वास करते हुए। इस स्थानमें (२) चित्रकूटमें भरतजी कातर हो तिनके निकट आये। उन्होंने भरतको समझाया और पिताजीके मरणकी वार्ता सुन दुःखित हुए और शेषवर्ष तपोवनमें बिताते हुए ॥ ३३ ॥

---

(१) पंचवटीवनं । दण्डकारण्यके अन्तर्गत गोदावरी नदीके किनारेपर यह वन है। इसका वर्तमान नाम नासिकतीर्थ है । "नादगांवके वाद कईएक स्टेशन पार होनेक पीछे नासिकरोड है। स्टेशनसे नासिक नगर उत्तर-पश्चिममें ६ माइल है । नजदीकही चार जनोंके बैठने लायक तांगा नामक गाडी पाई जाती है । यह गाडी घंटेमें ७ मील चलती है । दिन भरका भाडा २॥) रु० है। नासिक नगरके देखनेसे काशीकी याद आती है । विस्तारित, थाई और तेजधारवाली गोदावरीके किनारे प्रायः आध मैलतक घाट और मंदिरोंकी शोभा है। किनारेपर कोई स्नान करता है, कोई जप करता है, कोई चीज वस्तुको साफ करता है और कोई "त्र्यम्बकस्य जटोद्भूते गौतमस्याघनाशिनि । " कहकर गोदावरीकी स्तुति कर रहा है । कोई ऊपर मन्दिरमें दौड रहा है, कोई दुकानदारोंसे सौदा मोल ले रहा है, यौवनमदमाती कामिनियोंसे नगर कंपायमानसा है । विशेष हिवर आदि भ्रमण कारियोंने कहा है, नारियलके वर्णकी भारत-कामिनियें, विलायतकी श्वेतरंगवाली स्त्रियोंसे अच्छी हैं । यहांपर ३५००० आदमियोंकी वस्ती हैं; तिनमें १०००० ब्राह्मण हैं। गौतमीके (गोदावरीके) उत्तर तटपर स्थित इस नगरमें प्रवेश करके हम पंचवटीके रघुनाथजीके मन्दिरमें पहुँचे। पंचवटीमें पंचवटी विद्यमान है, इसके सिवाय और कोई वन नहीं। नासिक बडा भारी तीर्थ है । यहांपर लक्ष्मणजीने शूर्पणखाकी नाक काटी, इसी कारणसे इनका नाम नासिक हुआ है । रामचंद्रजीने सीताजीके लिये यहांपर बडा विलाप किया था । इस स्थानका वर्णन करके वाल्मीकिजीने जगत्को मोहित किया है । यहांसे बहुत दूर झिडिकाल्लुमें मारीचका वध हुआ था। सत्य हो वा मिथ्या हो, इस स्थानमें दौडते हुए हरिणके पदचिह्न पत्थरपर साफ दिखाई देते हैं । " (भारतभ्रमण)

(२) चित्रकूट-पर्वतविशेष । पयस्विनी (पिसानी-Pissani) नदीके किनारे स्थित है, बुन्देलखण्डके बान्दा नगरसे चित्रकूट प्रायः २५ कोश दक्षिण पूर्वको है । इस पवित्र स्थानमें अनेक मन्दिर हैं । रामलक्ष्मणजीका मन्दिर प्रधान है। यहांपर महर्षि वाल्मीकिजीका आश्रम है । यह स्थान वैष्णवोंका परम पूज्य है । विशेष करके रामोपासक लोग इसका अत्यन्त आदर करते हैं । यहांपर ' सीताफल ' नामक एक फल पाया जाता है । (Calcutta Review Vol. XXIII) यहांपर मन्दाकिनी नामक एक नदी है । ग्यारेट साहब कहते हैं कि, इस मन्दाकिनी नदीका वर्त्तमान नाम पिसानी (Pissani) है । (Garrett's Classical Dictionary of India)

इसके पीछे मारकुण्डा स्टेशन है चारों ओर पहाड और जंगलही दिखाई देते हैं । इस स्टेशनसे ६ कोश दूर हमीरपुरसे चित्रकूटको जाना पडता है । चित्रकूट पर्वतकी वनशोभा-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दशाननसहोदरां विषमबाणवेधातुरां
समीक्ष्य वररूपिणीं प्रहसतीं सतीं सुन्दरीम् ।
निजाश्रयमभीप्सतीं जनकजापतिर्लक्ष्मणात्
करालकरवालतः समकरोद्विरूपां ततः ॥ ३४ ॥

फिर कामबाणसे पीडित, श्रेष्ठ वेषवाली सुन्दरी, हास्ययुक्त, अपने प्रति अभिलाषा किये रावणकी बहिन शूर्पणखाको देखकर रामचन्द्रजीने लक्ष्मणजीको इशारा किया, लक्ष्मजणीने भी तीक्ष्ण करवाल (तलवार) से राक्षसीको कुरूप कियाथा अर्थात् इसके नाक कान काटडाले ॥ ३४ ॥

समाप्य पथि दानवं खरशरैः शनैर्नाशयन्
चतुर्दशसहस्रकं समहनत्खरं सानुगम् ।
दशाननवशानुगं कनकचारुचञ्चन्मृगं
प्रियाप्रियकरो वने समवधीद्बलाद्राक्षसम् ॥ ३५ ॥

फिर मार्गमें दानवको नष्ट कर चौदह हजार सेनाके स्वामी रावणके वशमें हुए (मातहद) खर दूषणको (उसके) अनुचरोंके साथ संहार किया, सीतजीकी प्रिय कामनासे चंचल सुवर्णमय मृगरूपी राक्षसका वध किया ॥ ३५ ॥

ततो दशमुखस्त्वरंस्तमभिवीक्ष्य रामं रुषा
व्रजन्तमनु लक्ष्मणं जनकजां जहाराश्रमे ।
ततो रघुपतिः प्रियां दलकुटीरसंस्थापितां
न वीक्ष्य तु विमूर्च्छितो बहु विलप्य सीतेति ताम् ॥३६॥

—अत्यन्त सुन्दर है। एक ओर मन्दाकिनी बहती है, तिसके किनारे तीर्थमन्दिर पर्वतके ऊपर श्रीराम, सीता और लक्ष्मणजीकी पाषाणमयी मूर्त्ति हैं। यहांपर रामघाट, देवाङ्गना, हनुमानधरा, फटिकशिला, गुप्त गोदावरी, पर्वतपर अनसूयाकी प्रतिमा, भरतकुण्ड, कामाख्यानाथपर्वत, पयोष्णी नदी, दासहनुमानस्थान, वीरहनुमानस्थान, बालदिवाकर और गफ हनुमानस्थान आदिके दर्शन होते हैं ।

कलकत्तारिबियूसे पहले दिखा आये हैं कि, चित्रकूटकी पयोष्णी नदीकाही वर्त्तमान नाम पिसानी है और भारतभ्रमण पुस्तकमें भी मन्दाकिनी और पयोष्णी दो नदियोंका नाम लिखा है इससे ज्ञात होता है, कि ग्यारेट साहबने मन्दाकिनीको पयोष्णी (Pissani) नदी कहकर धोखा खाया है ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसके उपरान्त मार्गमें रामलक्ष्मणको गमन करता हुआ देख, रावणने शीघ्रही आश्रमसे सीताजीको हरण किया। पर्णकुटीमें सीताजीको न देखपाय " हा सीते ! " कह बहुत विलापकर श्रीरामचन्द्रजी मूर्च्छित हुए ॥ ३६ ॥

वने निजगणाश्रमे नगतले जले पल्वले
विचित्य पतितं खगं पथि ददर्श सौमित्रिणा ।
जटायुवचनात्ततो दशमुखाहृतां जानकीं
विविच्य कृतवान्मृते पितरि वह्निकृत्यं प्रभुः ॥ ३७ ॥

फिर ऋषियोंके आश्रम, पर्वत, गुहा, जल और गढोंमें सब कहीं सीताजीको खोजकर मार्गमें गिरे हुए जटायुको देखा । और तिससे रावण करके सीताका हराजाना सुना । जब उस पितृतुल्य जटायुकी मृत्यु होगई तब उसका मृतककर्म किया ॥ ३७ ॥

प्रियाविरहकातरोऽनुजपुरःसरो राघवो
धनुर्धरधुरन्धरो हरिबलं नवालापिनम् ।
ददर्श ऋषभाचलाद्विजवालिराजानुज-
प्रियं पवननन्दनं परिणतं हितं प्रेषितम् ॥ ३८ ॥

सीताजीके वियोगसे धनुषधारियोंकी धुर धारण करनेवाले लक्ष्मणजीके साथ श्रीरामचंद्रजीने नई जानीहुई वानरसेनाके साथ साक्षात् किया और सूर्यपुत्र वालिके लघुभ्राता सुग्रीव (जो कि ऋष्यमूकपर (१) रहतेथे)के मंत्री हनुमान्जीको देखा ॥ ३८ ॥

---

(१) वृषभ पर्वत—वाल्मीकीय रामायणमें इसका नाम ऋष्यमूक पर्वत है । " बिलारी " (मद्रासप्रान्त) से ३० कोश दूर हाम्पि और आनिगन्धिमें किष्किन्धादि पर्वत है । किष्किन्धासे ४ कोश दूर ऋष्यमूक है । ऋष्यमूककी तराईमें पम्पासरोवर है । पम्पाको नदी वा सरोवर दोनों नामसे पुकारा जा सकता है। सरोवरका जल छोटी नदीके मेलसे बगलमें बहती हुई तुंगभद्रा नदीमें गिरता है। मतङ्गसरोवर पंपाका अंश है। पम्पाके पश्चिममें शबरीका आश्रम है। निकटही सरोवरके सामनेकी गुफामें सुग्रीवादि चार वानर रहा करते थे। किष्किन्धासे दूसरी ओर माल्यवान् पर्वत है । वर्षाकालके समय श्रीरामचन्द्रजी यहीं रहे थे। ईशानदिशाकी ऊँची गुफामें तिनका वासस्थान था । नीचे नदी बहती है। अबतक भी यह पर्वत स्वभावकी शोभासे सुन्दर है। (भारतभ्रमण) पूर्वघाट और नीलगिरि—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ततस्तद्वुदितं मतं पवनपुत्रसुग्रीवयो-
स्तृणाधिपतिभेदनं निजनृपासनस्थापितम् ।
विविच्य व्यवसायकैर्निजसखाप्रियं वालिनं
निहत्य हरिभूपतिं निजसखं स रामोऽकरोत् ॥ ३९ ॥

फिर रामचंद्रजीने सुग्रीव और हनुमान्‌जीके प्रार्थना करनेपर सप्त तालको भेद डाला और बाणसे वालिको मार सुग्रीवके साथ मित्रता कर तिसको वानरोंके राज्यपर स्थापित किया ॥ ३९ ॥

अथोत्तरमिमां हरिर्जनकजां समन्वेषयन्
जटायुसहजोदितैर्जलनिधिं तरन्वायुजः ।
दशाननपुरं विशञ्जनकजां समानन्दय-
न्नशोकवनिकाश्रमे रघुपतिं पुनः प्राययौ ॥ ४० ॥

इसके उपरान्त पवनकुमार हनुमान्‌जी जानकीजीको खोजते हुए संपातिके कहनेके अनुसार समुद्रको उतरगये और लंकापुरीमें प्रवेश करके अशोकवनमें सीताजीको संभाषण करके आनन्द देते हुए और फिर रघुनाथजीके निकट आये ॥ ४० ॥

ततो हनुमता बलादमितरक्षसां नाशनं
ज्वलज्ज्वलनसंकुलज्वलितदग्धलङ्कापुरम् ।
विविच्य रघुनायको जलनिधिं रुषा शोषयन्
बबन्ध हरियूथपैः परिवृतो नगैरीश्वरः ॥

–नामक पर्वतश्रेणीके मध्यका पर्वत है। इस स्थानसे कावेरी नदी उत्पन्न हुई है। (भागवत) बहुतसे ऋषभपर्वत हैं, यथा–१कैलासका निकटका एक पर्वत । यह हिमालयका स्वर्णमय शृंग है। इसकी बगलमेंही रजतमय कैलास है। इन दोनों पर्वतोंके मध्यमें मृतसञ्जीवनी, विशल्यकारिणी, सन्धिनी, और सुवर्णकरणी नामक औषधि हैं । (रामरसायन लंकाकांड-१३ अ०)। २–दक्षिण सागरका एक पर्वत है। यहांपर रोहितनामक गन्धर्व रहते हैं। शैलूष (विभीषणका श्वशुर) ग्रामणी, शिक्ष, शुक और बभ्रू यह पांच गन्धर्व रोहितोंके स्वामी हैं। (वा० किष्कि० ४१ सर्ग)। ३–पूर्व सागरका एक धवलवर्ण पर्वत है। इस पर्वतपर सुदर्शन नामक एक सरोवर है । (वा. कि. ४२ सर्ग)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बभञ्ज पुरपत्तनं विविधसर्गदुर्गक्षमं
निशाचरपतेः क्रुधा रघुपतिः कृती सद्गतिः ॥ ४१ ॥

फिर रामचंद्रजीने हनुमान् करके बलपूर्वक राक्षसोंका नाश और लंकाका जलाना जान क्रोधसे पर्वतद्वारा समुद्रको बाँध वानरयूथके साथ लंकामें गमन किया और राक्षसोंके स्वामी रावणके पुर प्राचीर (शहर-पनाह) किले आदि समस्त तोडडाले ॥ ४१ ॥

ततोऽनुजयुतो युधि प्रबलचण्डकोदण्डभृत्
शरैः खरतरैः क्रुधा गजरथाश्वहंसाकुले ।
करालकरवालतः प्रबलकालजिह्वाग्रतो
निहत्य वरराक्षसान्नरपतिर्बभौ सानुगः ॥ ४२ ॥

अनन्तर लक्ष्मणजीके सहित महीपाल श्रीरामचन्द्रजी, अतिउग्र शरासन (धनुष) धारण कर हाथी, घोडे रथसे युक्त तीक्ष्णावण और कराल खड्गसे राक्षसोंका संहार करके कराल कालकी जीभकी नोकके समान शोभयमान होने लगे ॥ ४२ ॥

ततोऽतिबलवानरैर्गिरिमहीरुहोद्यत्करैः
करालतरताडनैर्जनकजारुषा नाशितान् ।
निजघ्नुरमरार्दनानातिबलान्दशास्यानुगान्
नलाङ्गदहरीश्वराऽऽशुगसुतर्क्षराजादयः ॥ ४३ ॥

फिर नल, अंगद, वानरराज सुग्रीव, पवनकुमार हनुमान्, जाम्बवान् व और दो महाबली वानरोंने वृक्ष चलाय, पर्वत चलाय, भयंकर प्रहारों करके महाबली पराक्रमी देवताओंके वैरी रावणके सेवक राक्षसोंका संहार किया जो राक्षस कि, जानकीजीके क्रोधमें भरनेसे पहलेही नष्टसे हो रहे थे॥ ४३॥

ततोऽतिबललक्ष्मणस्त्रिदशनाथशत्रुं रणे
जघान घनघोषणानुगगणैरसृक्प्राशनैः ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रहस्तविकटादिकानपि निशाचरान्सङ्गतान्
निकुम्भमकराक्षकान्निशितखड्गपातैः क्रुधा ॥ ४४ ॥

महाघोर शब्दकारी, रुधिर पीनेवाले, अनुचरोंसे घिरेहुए, इन्द्रजित्को महाबलवान् लक्ष्मणजीने मारडाला, फिर इन्होंनेही क्रोध करके प्रहस्त, निकुम्भ, मकराक्ष और विकटादि आये हुए राक्षसोंको मारडाला ॥ ४४ ॥

ततो दशमुखो रणे गजथराश्वपत्तीश्वरै-
रलङ्घ्यगणकोटिभिः परिवृतो युयोधायुधैः ।
कपीश्वरचमूपतेः पतिमनन्तदिव्यायुधं
रघूद्वहमनिन्दितं सपदि सङ्गतो दुर्जयः ॥ ४५ ॥

इसके उपरान्त रावण लंघन करनेके अयोग्य करोड करोड गजारूढ, रथसवार, घुडसवार और पयदलोंकी सेनाके साथ संग्रामस्थलमें वानर-सेनाके स्वामी सुग्रीवके प्रभु असीम दिव्यास्त्रोंके धारण करनेवाले श्रीरामचन्द्रजीके निकट आय अस्त्रोंसे युद्ध करना आरम्भ करता हुआ ॥ ४५ ॥

दशाननमरिं ततो विधिवरस्मयावर्द्धितं
महाबलपराक्रमं गिरिमिवाचलं संयुगे ।
जघान रघुनायको निशितसायकैरुद्धतं
निशाचरचमूपतिं प्रबलकुम्भकर्णं ततः ॥ ४६ ॥

तब रघुवीर श्रीरामचन्द्रजीने ब्रह्माके निकट वर पानेसे वृद्धिको प्राप्त महाबली पराक्रमी संग्रामभूमिमें पर्वतकी समान अचल ऊधमी शत्रु, राक्षस-सेनाके पति रावणको और महाबलवान् कुम्भकर्णको तीक्ष्ण बाणोंसे बींधडाला ॥ ४६ ॥

तयोः खरतरैः शरैर्गगनमच्छमाच्छादितं
बभौ घनघटासमं मुखरमत्तडिद्वह्निभिः ।
धनुर्गुणमहाशनिध्वनिभिरावृतं भूतलं
भयङ्करानिरन्तरं रघुपतेश्च रक्षःपतेः ॥ ४७ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसके उपरान्त राम और रावणके परस्पर तीक्ष्ण बाणोंके चलनेसे आकाश ढकगया और ऐसा जान पडने लगा मानो बादलोंकी घटासे आकाशमंडल ढकगयाहै। बाणोंके परस्पर टकरानेसे शब्दसहित आगकी चिनगारियें निकलने लगीं, तिनसे शब्दायमान बिजलीकी समान शोभा हुई। वज्रके शब्दकी समान धनुषके रोदेके शब्दसे पृथिवी व्याप्त होगई, उस समय संग्रामस्थलने अत्यन्त भयंकर आकार धारण किया ॥ ४७ ॥

ततो धरणिजारुषा विविधरामबाणौजसा
पपात भुवि रावणस्त्रिदशनाथविद्रावणः ।
ततोऽतिकुतुकी हरिर्ज्वलनरक्षितां जानकीं
समर्प्य रघुपुङ्गवे निजपुरीं ययौ हर्षितः ॥ ४८ ॥

इसके उपरान्त इन्द्रको भी भयदायक रावण, सीताजीकी क्रोधाग्नि और रामचंद्रजीके अस्त्राग्नि इन दोनों अग्नियोंसे भस्महोकरही मानो पृथ्वीपर गिरगया। रावणके मारे जानेपर कपिश्रेष्ठ हनुमान्जीने जानकीजीको शुद्ध किया और रामचंद्रजीको समर्पणकर हर्षित चित्तसे अपने स्थानको चलेगये॥४८॥

पुरन्दरकथादरः सपदि तत्र रक्षःपतिम् ।
विभीषणमभीषणं समकरोत्ततो राघवः ॥ ४९ ॥

फिर देवराज इन्द्रके कहे अनुसार श्रीरामचंद्रजीने अभीषण (शान्त) विभीषण तत्काल राक्षसराज्यपर अभिषेकित किया ॥ ४९ ॥

हरीश्वरगणावृतोऽवनिसुतायुतः सानुजो
रथे शिवसखेरिते सुविमले लसत्पुष्पके ।
मुनीश्वरगणार्च्चितो रघुपतिस्त्वयोध्यां ययौ
विविच्य मुनिलाञ्छनं गुहगृहेऽतिसख्यं स्मरन् ॥ ५० ॥

वानर राजाओंके साथ सीता और लक्ष्मणजीको संग ले विमल शोभाय-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Acc No 511

मान पुष्पकविमानमें सवार हो श्रीरामचंद्रजी अयोध्या (१) में आये। चलनेके समय मार्गमें, वनके मध्य प्रवेश करनेके समय अपना मुनिवेष और गुह चाण्डालके साथ मित्रताका स्मरण करने लगे। फिर मुनिजनोंने आय-कर तिनकी पूजा की ॥ ५० ॥

ततो निजगणावृतो भरतमातुरं सान्त्वयन्
स्वमातृगणवाक्यतः पितृनिजासने भूपतिः।
वासिष्ठमुनिपुङ्गवैः कृतनिजाभिषेको विभुः
समस्तजनपालकः सुरपतिर्यथा सम्बभौ ॥ ५१ ॥

फिर निजजनोंसे युक्त हो, मनके दुःखसे कातर हुए भरतजीको समझाया बुझाया। वे (रामजी) माताओंकी आज्ञाके अनुसार पितृसिंहासनपर बैठकर राज्यमें अभिषेकित हुए। वसिष्ठादि महर्षियोंने तिनका अभिषेक किया। फिर वह इन्द्रजीकी समान समस्त लोकोंके स्वामी हो शोभायमान होनेलगे ॥ ५१ ॥

---

१ महाकवि तुलसीदासजीने अयोध्यापुरीको प्रायः अवधपुरी कहकर स्वरचित रामाय-णमें लिखाहै। यथा-

अवधपुरी रघुकुल मणिराऊ। वेदविदित तेहि दशरथ नाऊँ ॥ (बालकाण्ड)

अयोध्या उत्तरकोशलाकी राजधानी है। वैवस्वत मनुकी आज्ञासे विश्वकर्माजीने सरयू नदीके किनारे अयोध्या नगरीको बनाया और बसाया। प्राचीन अयोध्याकी लम्बाई ४८ कोश और चौडाई बारह १२ कोश थी। रामचन्द्रजीके पुत्र कुशने अयोध्याको छोड कुछ दिनतक कुशावतीमें राज्य किया, किन्तु अयोध्याकी अधिष्ठात्री देवीकी कातरतासे फिर यहीं चले आये (रघुवंश देखो)। अयोध्याका दूसरा नाम विनीता है। (कल्पद्रुमकालिका) इसका टूटा फूटा चिह्न देखनेसे केवल वैराग्य आजाता है। इस समय यह जंगलसे पूर्ण और दिल्लीसे १८० कोश दूर है। यह हुयैनसांगकी अयुतो वा अयुदो और तिधतवालोंकी बागद वा भागद है। तिधतवालोंके ग्रन्थमें लिखा है कि, साम्पर्क नामक एक शाक्य कपिलसे बागदमें निकाला गया उस समय वह वहांसे (कपिलसे) बुद्धजीके केश और नख ले आया था और इस नग-रीके स्थानमें उनको गाडकर उसके ऊपर एक मन्दिर बनाया जिसका नाम साम्पर्कस्तप है। अयोध्याका एक नाम साकेतपत्तन है। (अध्यात्मरामायण, आरण्यकाण्ड, भार्गवविजय) अयोध्याको विशाख वा विशाखपत्तनभी कहते हैं।

CunninGhma's Ancient Geography of India.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नरा बहुधनाकरा द्विजवरास्तपस्तत्पराः
स्वधर्म्मकृतनिश्चयाः स्वजनसंगता निर्भयाः।
घनाः सुबहुवर्षिणो वसुमती सदा हर्षिता
भवत्यतिबले नृपे रघुपतावभूत्सज्जगत् ॥ ५२ ॥

इस प्रकार अतिबलवान् पराक्रमी रघुवीरके राज्यारंभ करनेपर समस्त प्रजा ऐश्वर्यवान् (निधियुक्त) हुई । ब्राह्मणलोग सदा तप करने लगे । सबही निजजनोंसे मिलकर निर्भयाचित्तसे अपने अपने धर्मका अनुष्ठान करने लगे । समयपर बादरोंके सुवर्षा करनेसे वसुमती (पृथिवी) हर्षयुक्त हुई, समस्त जगत् सन्मार्गमें खडा होगया ॥ ५२ ॥

गतायुतसमाः प्रियैर्निजगुणैः प्रजा रञ्जयन्
निजां रघुपतिः प्रियां निजमनोभवैर्मोहयन् ।
मुनीन्द्रगणसंयुतोऽप्ययजदादिदेवान्मखै-
र्धनैर्विपुलदक्षिणैरतुलवाजिमेधैस्त्रिभिः ॥ ५३ ॥

इस प्रकारसे दश हजार वर्षतक श्रीरामाभिरामने अपने गुणग्रामसे प्रजा-रंजन किया । उन्होंने मनोरथ पूर्ण करके अपनी प्यारी जानकीजीके मनको आनन्दित कियाथा । वह महर्षियोंके सहित बहुतसी दक्षिणा दे देकर अनेक यज्ञ करके देवताओंको संतुष्ट करते और तीन अश्वमेध यज्ञभी इन्होंने निर्विघ्न करे ॥ ५३ ॥

ततः किमपि कारणं मनसि भावयन्भूपति-
र्जहौ जनकजां वने रघुवरस्तदा निर्घृणः ।
ततो निजमतं स्मरन्समनयत्प्रचेतःसुतो
निजाश्रममुदारधी रघुपतेः प्रियां दुःखिताम् ॥ ५४ ॥

फिर श्रीरामचन्द्रजीने निर्दयी हो, अन्तःकरणमें किसी एक कारणको शोचकर जानकीको वनमें छोडदिया । फिर उदार चित्तवाले

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वाल्मीकिजी, अपनी बनाई हुई रामायणको स्मरण करके, दुःखित हुई श्रीरामचन्द्रजीकी प्यारी जानकीजीको अपने आश्रममें ले गये (१)॥५४॥

---

(१) वाल्मीकि—जगत्प्रसिद्ध रामायणके रचयिता ऋषि । यह प्रचेताके पुत्र है । प्रचेता और वरुण एक मुनिका नाम है । पुराणमें १० प्रचेताओंका नाम हैं । हाविर्द्धानके औरससे धिषणा नामक पत्नीके गर्भमें प्राचीनबर्हिके सहित समुद्रकी पुत्री सवर्णाका विवाह हुआ । प्राचीनबर्हिके औरससे सवर्णाके गर्भमें १० पुत्र उत्पन्न हुए । इन पुत्रोंका नाम प्रचेता हुआ इन्होंने पिताकी आज्ञासे तप करके महादेवजीसे नारायणजीके माहात्म्यको जाना । फिर जब इन्होंने दश हजार वर्षतक समुद्रमें शयन करके विष्णुजीकी आराधना की तब कण्डु-मुनिकी कन्या मारिषा इनकी भार्या हुई । (भागवत, विष्णुपुराण, अग्निपुराण कूर्मपुराण, गरुडपुराण) इनसे पहले उत्पन्न हुए दश पुत्र राक्षस थे । तदुपरान्त दक्षजीका जन्म हुआ । महाभारत, रामायण और दूसरे पुराणोंमें इस बातका कोई वर्णन नहीं कि, वाल्मीकिजी-प्रचेताके पुत्र थे । वाल्मीकिजीके पिता भृगुवंशीय एक प्रचेता मुनि थे, इसी कारण वाल्मीकि जीको भार्गव कहागया है । यथाः—

रावणान्तकरो राजा रघूणां वंशवर्द्धनः । वाल्मीकिर्यस्य चरितं चक्रे भार्गवसत्तमः ॥

(मत्स्यपुराण १२ अध्याय)

महर्षि वाल्मीकिजीका आश्रम पहले चित्रकूट पर्वतपर था । वाल्मीकिरामायण, अयोध्या-काण्ड ५६ सर्गमें रामजीका वाल्मीकिजीके आश्रममें जाना देखो । परन्तु रघुनन्दन गोस्वामीने चित्रकूटके वाल्मीकिजीको दूसरा वाल्मीकि कहा है । यथाः—

सोरजनी करि तहीं निवासा । भोरहि चित्रकूटके पासा ॥
तहां विद्वान सर्व गुणधामा । दूसर वाल्मीकि तेहि नामा ॥
गये तहां प्रभु करुणाकन्दा । पुलकि मिलेउ ऋषि भयउ अनन्दा ॥

(श्रीमद्रामरसायन अयोध्याकाण्ड ५ अध्याय)

भक्तमाल नामक ग्रंथमें दूसरे वाल्मीकिजीके नामसे एक दूसरे वाल्मीकि मुनिके चरित्रका वर्णन हुआ है । यह मुनि, महाराज युधिष्ठिरके यज्ञमें गये थे ।

फिर उनका आश्रम प्रयागविभागके अन्तर्गत तमसा नदीके किनारे था । यह तमसा नदी चित्रकूटके पहाडी देशसे उत्पन्न होकर बराबर पूर्वोत्तर दिशामें बहती हुई प्रयागके कुछ दूर नीचेकी ओर गंगाजीके साथ मिलती है । महाकवि कालिदासजी कहते हैं:—

रथात्स यंत्रा निगृहीतवाहात्तां भ्रातृजायां पुलिनेऽवतार्य ।
गंगा निषादाहृतनौविशेषस्ततार सन्धामिव सत्यसन्धः ॥ (रघुवंश १४ सर्ग ५२ श्लो०)

अस्यार्थः—सुमंत्र सारथीके द्वारा घोडोंकी लगाम खैंची जानेपर, सत्यसन्ध लक्ष्मणजीने भ्रातृजाया (भाभी) सीताजीको रथसे पुलिनमें (नदीके तीरपर) उतारा और निषाद करके लाई हुई नावमें तिनको सवार कराकर अपनी प्रतिज्ञा और गंगा दोनोंकेही पार हुए ॥ ५२ ॥ (पं. ज्वालाप्रसादमिश्रद्वारा अनुवादित रघुवंश) तदुपरान्तः—

अशून्यतीरां मुनिसन्निवेशैस्तमोऽपहन्त्रीं तमसां वगाह्य ।
तत्सैकतोत्संगवालिक्रियाभिः सम्पत्स्यते ते मनसः प्रसादः ॥ (रघु० १४ स० ७६ श्लो०)

अस्यार्थः—(वाल्मीकिजी सीताजीसे कहते हैं) मुनियोंकी कुटियोंसे घिरी हुई तीर—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ततः कुशलवौ सुतौ प्रसुषुवे धरित्रीसुता
महाबलपराक्रमौ रघुपतेर्यशोगायनौ ।

वाली, पाप दूर करनेहारी तमसामें स्नान कर उसके किनारे इष्टदेवताके पूजन करनेसे तेरे मनमें प्रसन्नता होगी ॥ ७६ ॥ (पं. ज्वालाप्रसादमिश्रद्वारा अनुवादित रघु० ४५३ सफा ६ पं०)

महर्षि वाल्मीकि और महाकवि कालिदासजीके वर्णनसे भलीभाँति जाना जाता है कि, जिस स्थानमें गंगाजीके साथ तमसाका संगम होता है तिसके कुछही दूरपर तमसाकी बांई ओर महर्षि वाल्मीकिजीका आश्रम था, नकशेमें यह तमसानदी (South Tonse) लिखी गई है, उत्तर तमसा (North Tonse) नदी अयोध्याकी भूमिमें सरयू और गोमतीके बीच बहती हुई पूर्व दाक्षिणकी ओर आकर प्रयागसे कुछ दूर गंगाजीके साथ मिलगई है ।

बहुत आदमी कहते हैं और मैंभी कहताहूं कि, वर्त्तमान कानपुरसे कुछ दूर गंगाजीके किनारे विठूर नामक स्थानमें महर्षि वाल्मीकिजीका आश्रम था । लक्ष्मणजी गंगाके पार हो इसी आश्रममें सीताजीको छोड आये थे । अबभी सुना जाता है कि, विठूरमें गंगाजीके किनारे बहुतसे मन्दिर और रामसीता आदिकी मूर्त्ति हैं । यात्री लोग इस स्थानकोही महर्षि वाल्मीकिजीका आश्रम बताते हैं । परन्तु यहांपर तमसा नामक कोई नदी नहीं है । पहली कहीं उत्तरतमसाभी, विठूरके निकट गंगाके उत्तरमें जो गोमती है, तिसके उत्तरमें बहती है । अतएव इस समय भलीभांति जाना जाता है कि, महर्षि वाल्मीकिजीका आश्रम विठूरमें नहीं था, बरन्न प्रयागके निकट गंगापारमें दाक्षिण तमसाके तटपर था । लक्ष्मण व सीताजीके सहित रामचंद्रजी वनगमनके समयमें अयोध्यासे बराबर दाक्षिण दिशामें आये शृङ्गवेरपुरमें गंगाजीके पार हो महर्षि भरद्वाजजीके आश्रममें आये थे । लक्ष्मणजीभी इसी मार्गसे सीताजीको महर्षि वाल्मीकिजीके आश्रममें लाये थे । परन्तु भेद इतना है कि, शृङ्गवेरपुरमें गंगाजीके पार न होकर बराबर गंगाजीके उत्तर किनारेपर आये प्रयागके कुछ दूर दाक्षिण गंगाके पार हुए थे । तिसकेही कुछ दूर पश्चात् दाक्षिण तमसाके तटपर महर्षि वाल्मीकिजीका आश्रम वा तपोवन है । इनके प्रधान शिष्यका नाम भारद्वाज था । महर्षि वाल्मीकिजीने तिसके दाक्षिण तमसा नदीके आश्रममेंही, रावणादि वध और सीता उद्धारके पीछे राज्यभोगके समय अपनी प्रसिद्ध अनन्त अमृतसागररूपी रामायण महाकाव्यकी रचना की ।

इनहीं महर्षिजीने प्रथम अनुष्टुप् छन्दको निर्माण किया । तमसानदीके किनारे एक व्याध करके क्रौञ्च पक्षीके मारेजानेको देखकर तिनकी रसनासे यह प्रथम अनुष्टुप् छन्दका श्लोक निकलाथाः—

मा निषाद ! प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः । यत् क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ॥
(वा० रामा० बा० २ सर्ग)

पद्मपुराणमें यह श्लोक कुछ बदला हुआसा है । यथाः—

मा निषाद ! प्रतिष्ठास्त्वमगमः शाश्वतीः समाः । यत् क्रौञ्चपक्षिणोरेकमवधीः काममोहितम् ॥
(पद्मपु० पातालखंड, ९४ अ०)—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स तामपि सुतान्वितां मुनिवरस्तु रामान्तिके
समर्पयदनिन्दितां सुरवरैः सदा वन्दिताम् ॥ ५५ ॥

कुश और लव नामक दो महाबली पराक्रमी पुत्रोंको धरतीकी पुत्री सीताजीने उत्पन्न किया । इन कुमारोंने रामचन्द्रजीके पास आय तिनके यशको गाया । इन दो पुत्रोंके साथ मुनिश्रेष्ठ वाल्मीकिजीने निन्दाराहित देवताओंसे पूजित सीताजीको श्रीरामचन्द्रजीके निकट समर्पण किया॥५५॥

ततो रघुपतिस्तु तां सुतयुतां रुदन्तीं पुरो
जगाद दहने पुनः प्रविश शोधनायात्मनः ।
इतीरितमवेक्ष्य सा रघुपतेः पदाब्जे नता
विवेश जननीयुता मणिगणोज्ज्वलं भूतलम् ॥ ५६ ॥

सन्मुखही रोती हुई पुत्रोंके सहित जानकीजीसे श्रीरामचंद्रजीने कहा— तुम अपनी शुद्धिके निमित्त (सबके सौंही) फिर अग्निमें प्रवेश करो; सीताजीने रामचंद्रजीका यह वाक्य सुनकर उनके चरणकमलमें प्रणाम किया और आई हुई माता पृथ्वीके साथ मणियोंसे उज्ज्वल हुए पातालमें प्रवेश करगई ॥ ५६ ॥

निरीक्ष्य रघुनायको जनकजाप्रयाणं स्मरन्
वसिष्ठगुरुयोगतोऽनुजयुतोऽगमत्स्वं पदम् ।
पुरः स्थितजनैः स्वकैः पशुभिरीश्वरः संस्पृशन्
मुदा सरयुजीवनं रथवरैः परीतो विभुः ॥ ५७ ॥

—प्रधानतः इन अनुष्टुप् छन्दोंमेंही रामायण माहाकाव्य बनाया गया । इनके सिवाय मालिनी आदि कई प्रकारके छन्द भी और स्थानोंमें विशेषतः प्रति सर्गके पीछे व्यवहारमें आये हैं।

किसी किसीका मत है कि, रामचंद्रजीकी जन्म होनेसे साठ हजार वर्ष पहले वाल्मीकिजीने रामायण बनाईथी । कोई कोई कहते हैं कि, महर्षि वाल्मीकिजी पहले जन्ममें रत्नाकर एक चोर निषाद थे । इन्होंने रामका उलटा नाम जपकर (मरा मरा) बहुत दिनोंतक तप किया। इनके शरीरपर बमई जम गई थी, रामनामके जपसे इनके समस्त पाप छूटे और यह सिद्ध हुये तब ब्रह्माजीने आकर इनको पुकारा इन्होंने वल्मीकके ठियेसे निकलकर उनको प्रणाम किया, ब्रह्माजीने वर देकर रामायण महाकाव्य बनानेकी आज्ञा दी । इनके ससस्त अंगमें वल्मीक उत्पन्न होगई थी, इससेही वाल्मीक नाम हुआ ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रामचंद्रजी जानकीजीका इस प्रकारसे पातालमें समाना देख; इस बातका स्मरण करते गुरु वसिष्ठ, अनुजगण, पुरवासी लोग और पशुओंके साथ प्रसन्न चित्तसे सरयू नदीके जलको स्पर्श करके दिव्य विमानमें सवार हो वैकुण्ठधामको चलेगये ॥ ५७ ॥

ये शृण्वन्ति रघूद्वहस्य चरितं कर्णामृतं सादरात्
संसारार्णवशोषणं च पठतामामोददं मोक्षदम् ।
रोगाणामिह शान्तये धनजनस्वर्गादिसम्पत्तये
वंशानामपि वृद्धये प्रभवति श्रीशः परेशः प्रभुः ॥ ५८॥

इति श्रीकल्किपुराणेऽनुभागवते भविष्ये तृतीयांशे सूर्य्यवंशानुवर्णने
श्रीरामचन्द्रचरितं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

इस कर्णामृत श्रीरामचरित्रको जो लोग आदरपूर्वक सुनेंगे श्रीश परमेश प्रभु श्रीरामचंद्रजीकी कृपासे तिनकी बाधा दूर होगी, रोगकी शान्ति होजायगी, वंश बढेगा और धनसम्पत्ति, जन सम्पत्ति, स्वर्गादिसम्पत्ति तिनको प्राप्त होगी । इसके पाठ करनेसे अन्तःकरणमें आनन्द उत्पन्न होगा, संसारसागर सूखजायगा और परमपुरुषार्थ मुक्तिपद प्राप्त होगा ॥ ५८ ॥

इति श्रीकल्किपुराणेऽनुभागवते भविष्ये तृतीयांशे बलदेवप्रसादमिश्रकृतभाषाटीकायां
सूर्यवंशानुवर्णने श्रीरामचंद्रचरितं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥